

DPN 6313

Title : [त्रिपुरा / TRIPURĀDEVĪSTOTRA]
देवी स्तोत्र

Run. No. 7004

Cat. No.

Micro. No.

Subject Stotra

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 11.5 X 5.8

Folios 10

Lines (in a page) 5/6

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

अथ त्वं त्रिपुरा देवी निम्नरे ज्योतिरूपिणी - - -

10

5



5

10

15

20

CMS

10

ॐ नमः शिवाय नमः वा ॥ जय त्रिपुर
 द वानि म न श्चानि नृपिणा । वृद्धो क्व व
 द्दि म ॥ ५ ॥ दिव्या म त ॥ ५ ॥ वृत्तीना ।
 अननि वि ॥ ५ ॥ वि त्वं कुरु ता का
 नृपिनी । मा गति पथ नम द वः शुद्धि
 मा गति पृ न ॥ ५ ॥ जय श्री गणेश

5

ननीः निगुननि वि का न न श्चाम
 याः नृ क्व क्वदि न न पुता न न य
 ना लो लो ना मा लो लो न न न
 व न न द वी त्वदिवा लो न न प न म
 न दा यनी नि व ॥ तत्त्व नृपा ॥ ५ ॥

5

10

15

20

ट वृनादियलिङ्ग सायिनी का का
 न नृपा उश्राय का ॥ ति ॥ नृप वृप
 ह नृपा मारिवि विषु नृप वृप शी न
 वृप वृप मान ॥ नृप वृप म हासा
 दि लक्ष्मि महा कालि नृप वृप कृकि
 का लीला क वृप म नृप वृप धव

ति पथा का नृप वृप नि (म ॥ वृप
 नृप नि क्रिया ॥ नृप वृप नृप का का
 नृप वृप नृप नृप वृप का टि ॥ नि
 कि वृप वृप वृप वृप वृप वृप
 म हा ॥ नृप वृप वृप वृप वृप वृप
 ला नृप वृप वृप वृप वृप वृप

10

सुष्ठि पात सं दार्थ न तत्क न सनित्वं
 नृग ह्री दिष्टि पा न शूला का मध्य कुरु
 स्याह व न्न न शूत्व मु क नृ पा रु ग पू
 व्या वि नी त्वं वृष्णी नो दी षु रु न दे नी त्वं
 ह न वी त्वं पू र्ण मख द्यु व्या पि वृ ष्णी र्ण
 पू र्ण कल व र्ण क ग्रं सि क त्वं ह नी वि स

5

वि का नि त्वं ह नि ला लं व नि स्क्ल लं व
 स क ता स ह मु मूर य ह स ह मृ गी षा स
 ह प्र नं गु त्स ह मृ वा द्वा स ह मृ व न द्वा
 य रा वृ ष्णी र्ण व्या वि षा श्र प नं श्र प व
 ना श्र का श्र व र्ण पा न व हि नं श्र मृ यी य
 ना वृ ष्णी र्ण का व र्ण ना व र्ण का व र्ण ना वि

६६

5

10

15

20

10

5

मनुवापद्मं कुरुक्षेत्रं काविकुम्भं

0

CMS

5

10

15

20

10

5



5

10

15

20

CMS

10

5

5

10

15

20

0 CMS



नं नीका य नमः॥ प्रप न यायम
 प्रित पु ता न न स्तु र व र य
 द न र व म न क मू र्ति च विव
 भु म न स्तु र नि गि र्नि र न न
 पा त र नी दा ॥ इ र्था ल श सृ ति

थ प्रिति ग ल स हि ता मा त द ग
 पा ला थ गि न्या अ ग र्का ज ल
 व ल ख व ला पा न म न त पि व न
 पि व न द व ता स व स रे दा च ग
 न वि पा थ गि नी क प्र या ला ष

10

मम दृष्टय वसि तादा काया
 व तपन याय ॥ असा विगणिक
 म्मा था रीम हा विं ल ति म गु
 वि त्र व के सिन्दी व द अ सा त क
 स म वि त । न म क व के व लि च

5

नम क लान दा य क न म क र
 त्र व त्र यो य न म क र व ता त क
 अ सा क व त्र गि न्या नी व त्र का
 ना त थ व व त्र व न क म य
 क म का का त न मा म्य ह । N ।

5

10

15

20

अविनाशेन वदह अज्ञताय
 तमवचमसहामहात्म्यं वदह
 तज्ञा श्रीमककुटुम्ब ॥ १ ॥ तना
 श्रया वविलक्ष्मीसंपत्ति
 वदुन । महापूक्ति वदह

अयं श्रीकान्तिवधनं तसाय
 नायसवस्य दवदवस्यनिमि
 तं पत्रमुत्तमादिद्यप्रीयतां
 एवह तव जने न कलुषाणि
 थानेन कुकुत्सपुति को ॥ नक्ष

नृणां लाचार्यं अचान्यवनभा
 नेम ॥५॥ दहसा खसा दम्
 खाग अमखा के गात्रवाहे
 वाशे गिन्यां व डे का ऽवे रूके
 पि त त्रे ह गाल का व ग का

पीसा वा गहा र्भन्यख
 व त्रे ह व त्रे सुख व त्रे व ग
 त्रे का व त्रे का त्रे ग्रा म्य कुल
 प त्रे क म्य पि त्रे य त्रे व दिव्य व

10

5

Handwritten text in a script, likely Devanagari, on a piece of aged, yellowish-brown paper. The text is arranged in a single line and appears to be a religious or philosophical statement. The paper is placed on a white background with a grid pattern.

5

10

15

20